Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 7, July - 2026

DOIs:10.2018/SS/202607010 --:-- Research Paper / Article / Review

राम कथा में स्त्री चिंतन व स्वरूप

डॉ. भावना
असिस्टेंट प्रोफेसर, हुकुम सिंह बोरा राजकीय परास्नातक महाविद्यालय, सोमेश्वर, उत्तराखंड।
ssptripathi2011@gmail.com

सारांश: प्रस्तुत शोधपत्र में रामकथा के विभिन्न स्त्री पात्रों के वैचारिक चिंतन, चारित्रिक स्वरूप और उनकी समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है। रामकथा के स्त्री पात्र—जैसे सीता, उर्मिला, कौशल्या, सुमित्रा, कैकयी और मंदोदरी—त्याग, सहिष्णुता, कर्तव्यपरायणता, विवेक और वात्सल्य जैसे उच्च भारतीय मूल्यों से परिपूर्ण हैं। जहाँ सीता और उर्मिला पतिव्रत धर्म और लोकोत्तर त्याग की प्रतिमूर्ति हैं, वहीं कौशल्या और सुमित्रा का चरित्र आदर्श मातृत्व को दर्शाता है। यहाँ तक कि कैकयी और मंदोदरी जैसी नकारात्मक या उपेक्षित मानी जाने वाली नारियों के चरित्र में भी मानवीय संवेदना, पश्चाताप और राजनीतिक दूरदर्शिता दिखाई देती है। वर्तमान भूमंडलीकरण और आधुनिकता के दौर में, जब नैतिक मूल्य लुप्त हो रहे हैं, रामकथा के ये स्त्री पात्र न केवल स्त्री-चेतना को जाग्रत करते हैं, बल्कि नारी की भव्य गरिमा को सुरक्षित रखने में भी पूर्णतः प्रासंगिक हैं।

मुख्य शब्द: रामकथा, स्त्री-चिंतन, चारित्रिक आदर्श, त्याग और सहिष्णुता, स्त्री-चेतना, स्त्री-विमर्श, समकालीन प्रासंगिकता ।

शोधपत्र:

"नारी के जिस भव्य भाव का, स्वाभिमान भाषी हूं मैं। उसे नरों में भी पाने का, उत्सुक अभिलाषी हूं मैं।"1

राम कथा को यदि भारतीय संस्कृति का रूपक कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। राम कथा भारत की आदि कथा है तथा इसके सभी पात्र भारतीय संस्कृति को महिमा मंडित करते हुए दिखाई देते हैं। राम कथा के स्त्री पात्रों की यदि बात की जाए तो ये स्त्री पात्र अपनी एक विशेषता लिए हुए हैं, जो आदर्श पतिव्रता, त्याग की प्रतिमूर्तियां, विवेकवान, समर्पणशील, कर्तव्य परायण इत्यादि गुणों से परिपूर्ण होने के साथ ही साथ युग धर्म की रक्षिका एवं भारतीय मूल्यों के प्रति असीम आस्थावान भी हैं। भारतीय स्त्रियों में सीता जी का स्मरण बड़े ही श्रद्धा व भक्ति से किया जाता है। सीता का जीवन हम सबके लिए एक प्रकाश स्तंभ की भांति है, जो सदैव मानवता के पथ को आलोकित करता है। इनके पावन चरित्र से अभिभूत होकर स्वामी विवेकानंद का उनके विषय में कहा गया यह कथन एकदम सत्य साबित होता है कि –

"सीता के विषय में क्या कहा जाए। तुम संसार के पूरे प्राचीन साहित्य को छान डालो, मैं तुमसे निः संकोच भाव से कहता हूं, तुम संसार के भावी साहित्य का भी मंथन कर सकते हो, परंतु उसमें भी तुम सीता के समान दूसरा चरित्र नहीं निकाल सकोगे। सीता का चरित्र अद्वितीय है। यह चरित्र सदा के लिए एक ही बार चित्रित हुआ है दोबारा कभी ना हुआ और ना ही कभी होगा।" 2

वास्तव में राम कथा की स्त्री पात्रों में सीता का चरित्र ही सर्वाधिक संयमशील, सहिष्णु, विनयशील, लज्जाशील व पतिव्रत धर्म की दीप्ति से देदीप्यमान है। भारतीय संस्कृति में पति व पत्नी को एक दूसरे का पूरक कहा जाता है। राम के द्वारा जब सीता से वन में साथ न चलने की प्रेरणा की जाती है उस समय जिन शब्दों के साथ सीता द्वारा अपना अंतिम निर्णय सुनाया जाता है, तब हमें सीता के चरित्र में एक आदर्श पत्नी का चरित्र दृष्टिगोचर होता है। वह श्री राम से कहती है_

"प्राणनाथ तुम्ह बिनु जग माहीं।
मो कहुं सुखद कतहुं कुछ नाहीं।
जिय बिन देह नदी बिनु बारी।

तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी।।" 3

स्त्री चरित्र के जितने भी भारतीय आदर्श माने गए हैं, वह सभी सीता के चरित्र में विद्यमान हैं। अशोक वाटिका में जब रावण के द्वारा साम, दाम, दंड, भेद आदि के माध्यम से सीता को उसके आदर्श के मार्ग से विचलित करने का प्रयास किया जाता है, तब सीता अपने पारिवारिक आदर्श का परिचय देते हुए केवल प्रभु श्री राम का ही ध्यान करती है_

"**तृण धरि ओट कहति वैदेही,**
सुमिरि अवधपति परम स्नेही।
सुनु दस मुख खघोत प्रकासा,
कबहुं कि नलिनी करइ विकासा।।" 4

जब लोकापवादों के कारण सीता को निर्वासित होना पड़ता है तब उस कठिन घड़ी में भी सीता अपने सहिष्णु चरित्र का परित्याग नहीं करती और ना ही अपने पति को ही दोष देती है। वह तो अपने चारित्रिक श्रेष्ठता को सिद्ध करते हुए इसे लोकोत्तर त्याग कहकर शिरोधार्य करते हुए कहती है कि_

"**यदि कलंकित हुई कीर्ति तो मुंह कैसे दिखलाऊंगी ।**
जीवनधर पर उत्सर्जित हो जीवन धन्य बनाऊंगी।
है लोकोत्तर त्याग अपना लोकाराधन है न्यारा।
कैसे संभव है कि वह न हो शिरोधार्य मेरे द्वारा।।" 5

सीता के ही समान उनकी तीन अन्य बहनों उर्मिला मांडवी तथा श्रुति कीर्ति जो क्रमशः लक्ष्मण भरत तथा शत्रुघ्न की पत्नियां थी, इन्होंने अपनी बड़ी बहन सीता के साथ राजा दशरथ के घर में अपने निः स्वार्थ भाव, सदाचार, विनम्रता, सहनशीलता इत्यादि गुणों से रघुवंश में अलौकिक आनंद की सृष्टि की। यदि उर्मिला भी सीता की भांति अपने पति लक्ष्मण के साथ वन में जाकर रहती तो उसे भी कुछ संतोष होता लेकिन उसने अपने पति के संकल्प एवं राम सेवा के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 14 वर्ष तक एकाकी जीवन व्यतीत किया। राम काव्य परंपरा में यदि उर्मिला के चरित्र का कहीं सफल रेखांकन हुआ है तो वह है साकेत और उर्मिला में। इनमें उर्मिला के उपेक्षित व्यक्तित्व को सफलतापूर्वक उभरा गया है। साकेत के नवम सर्ग में उर्मिला के विरह विषाद की चरम निदर्शना साकेतकार के द्वारा सफलतापूर्वक की गई है। उर्मिला संपूर्ण भोगों का त्याग करके अपने मन मंदिर में अपने प्रिय की प्रतिमा स्थापित करते हुए अपने संपूर्ण जीवन को योगमय कर देती है।

"**मानस मंदिर में सती पति की प्रतिमा थाप,**
जलती थी उस विरह में बनी आरती आप।
आंखों में प्रिय मूर्ति थी, भूले थे सब भोग,
हुआ योग से भी अधिक,
उसका विषम वियोग।" 6

इसी प्रकार का जीवन मांडवी व श्रुतिकीर्ति को भी जीना पड़ा ।

क्योंकि भरत व शत्रुघ्न भी राजभवन में न रहकर नंदीग्राम में श्री राम चरण की पादुका की सेवा करते हुए वहीं से शासन कार्य चलाते थे। इस प्रकार देखा जाए तो राम काव्य में दशरथ के चारों पुत्र वधुओं ने 14 वर्ष तक त्याग एवं तपस्या से जीवन व्यतीत किया। माता कौशल्या की यदि बात की जाए तो वह कोमल मातृ हृदया थी। पुत्र के वन गमन की घटना यद्यपि उसके लिए हृदय विदारक थी किंतु इसके बावजूद भी वह पुत्र के कर्तव्य मार्ग में बाधक नहीं बनी। भरत के कारण राम को वनवास हुआ फिर भी कौशल्या का स्नेह भरत के प्रति रामवत ही रहा। एक आदर्श मां के चरित्र को प्रस्तुत करती हुई कौशल्या भरत में राम का स्वरूप पा लेती है _

"**खींचा उनको, ले गोद, हृदय लिपटाया,**
बोली, तुमको पा पुनः राम को पाया।" 7

माता कौशल्या व सुमित्रा का जो चरित्र वाल्मीकि तथा तुलसी के राम कथा में देखने को मिलता है, वैसा चरित्र विश्व के किसी भी साहित्य में उपलब्ध नहीं होता। जब श्री राम माता कौशल्या के पास आकर पिता की आज्ञा को बताते हुए वनवास के लिए विदा लेते हैं, उस समय माता कौशल्या का उत्तर उनके उदात्त चरित्र को दर्शाता है। वह राम से कहती है कि यदि 14 वर्ष का वनवास सिर्फ पिता की आज्ञा है तो मैं तुम्हारी मां होने के नाते इस आज्ञा को यहीं रद्द करती हूं, लेकिन यदि यह आज्ञा तुम्हारे पिता के साथ-साथ माता कैकयी की भी है तो फिर यह 14 वर्ष का वनवास सैकड़ो अवध के समान है_

"जौ केवल पितु आयसु ताता।
तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता।।
जौ पितु मातु कहेउ बन जाना।
तौ कानन सत अवध समाना।।"8

ऐसे ही माता सुमित्रा के चरित्र की ऊंचाइयों को छूं पाना हर स्त्री के लिए संभव नहीं है। जब लक्ष्मण राम के साथ वन जाने के लिए अपनी माता सुमित्रा से आज्ञा प्राप्त करते हैं, उस समय माता सुमित्रा लक्ष्मण से जो कथन रहती है वह कथन एक मां की विशाल हृदयता के परिचायक हैं। वह लक्ष्मण से कहती है कि_

"तात तुम्हारी मातु वैदेही।
पिता राम सम भांति सनेही।।
अवध तहां जह राम निवासु।
तहई दिवस जह भानु प्रकासु।।
जौ पै सीय राम बन जाहीं।
अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं।।"9

इस प्रकार माता सुमित्रा ने अपने पुत्र को सदैव विवेकपूर्ण कार्यों के प्रति प्रेरित किया, साथ ही उसे मन, वचन व कर्म से अपने भाई की सेवा में लीन रहने का उपदेश देते हुए राग, द्वेष, ईर्ष्या आदि से दूर रहने के आचरण की सीख प्रदान की। राम काव्य में यदि किसी स्त्री पात्र की सबसे अधिक आलोचना हुई है तो वह है माता कैकयी। यही कारण है कि हिंदू परिवारों में आज भी लड़कियों का नाम कैकयी नहीं रखा जाता। राम काव्य परंपरा में कैकयी का चरित्र विविधताओं से परिपूर्ण है।

डॉक्टर रामविनोद सिंह के शब्दों में_-

"वाल्मीकि की कैकयी व्याध का क्रूर बाण है, मानस की कैकयी सरस्वती का शापमय वाहन है, लेकिन साकेत की कैकयी ममतामई माता है, जिसमें मानवीय मूल्यों के प्रति गहरा राग है।" 10

वाल्मीकि रामायण में तो यह भी स्पष्ट रूप से वर्णित हुआ है कि कैकयी का विवाह ही दशरथ के साथ इस शर्त पर हुआ था कि राज्य उसके पुत्र को मिलेगा। कैकयी के हृदय में अपने पुत्र के लिए असीम वात्सल्य भाव है, किंतु पुत्र का राज्य के प्रति उपेक्षा भाव देखकर उसका हृदय निराशा, ग्लानि व पश्चाताप से जल उठता है। उसके निम्न कथनों में कितनी आत्मव्यथा व विषाद है, जब वह स्वयं को धिक्कारती हुई कहती है कि_

"युग युग तक चलती रहे यह कठोर कहानी
रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी निज जन्म _ जन्म में जीव सुने यह मेरा, धिक्कार उसे था महास्वार्थ ने घेरा।।"11

कैकयी ने जो भी अपराध किया वह मातृत्व के वशीभूत होकर किया लेकिन पश्चाताप की अग्नि में जलकर उसका हृदय पुनः निष्कलुष व पवित्र हो गया। कतिपय विद्वानों व आचार्यों का तो यह भी मानना है कि कैकयी ने यह कलंक का टीका अपने माथे पर इसलिए लगाया कि वह मानवता का रक्षण कर सके तथा राम के माध्यम से आदर्श मानवीय चरित्र को इस संसार में स्थापित कर सके। यदि मंदोदरी की बात की जाए तो वह एक ऐसी नारी पात्र है जिसे राजनीति में विशारद हासिल था। समय की प्रतिकूलता को जानकर उसने अनेक विधियों से रावण को समझाने का प्रयास किया किंतु रावण के हठ के कारण वह अपने प्रयास में असफल सिद्ध हुई। ऐसी विषम परिस्थिति में वह समझ गई थी कि काल के वशीभूत होने के कारण उसके पति रावण को अभियान आ गया है_

"नाना विधि तेहि कहेसि बुझाई।
सभा बहोरि बैठ सो जाई।।
मंदोदरी हृदय अस जाना।
काल बस्य उपजा अभिमाना।।"12

राम कथा परंपरा में अन्य स्त्री पात्रों का भी उल्लेखपूर्ण वर्णन हुआ है, जिनमें मंथरा, शूर्पनखा, शबरी, अनुसूया के नाम प्रमुख हैं। मंथरा का चरित्र जहां एक तरफ नीच दासी के रूप में चित्रित हुआ है, वहीं दूसरी तरफ वह स्वामी भक्त तथा कर्तव्य परायण स्त्री भी है। वह रघुकुल में संशय का विष तो उत्पन्न करती है लेकिन वह कैकयी के हृदय में स्थित मातृ प्रेम को भी उभारती है। शूर्पणखा के जो नारी सुलभ भाव हैं वो पंचवटी में दिखाई देते हैं। शबरी की भक्ति भावना के विषय में तो मानस में उल्लेखनीय वर्णन हुआ है।

वह अपनी भक्तिमय भावना से प्रभु श्री राम का आतिथ्य सत्कार करती है और प्रभु श्री राम ने भी उसका आतिथ्य सत्कार प्रेम सहित स्वीकार किया_

"कंद, मूल, फल सुरस अति
दिए राम कहुं आन।
प्रेम सहित प्रभु खाए, बारंबार बखानी।।"13

मानस में अनसूया की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन भी हुआ है। वह सीता को पतिव्रता धर्म की शिक्षा देती हुई वर्णित की गई है_

"उत्तम के अस वस मन माहीं।
सपनेहुं आन पुरुष जग माहीं।
मध्यम परपति दिखई कैसे।
भ्राता पिता पुत्र निज जैसे।।"14

वस्तुतह राम काव्य परंपरा से संबंधित जितने भी ग्रंथ आज तक रचित है, उनमें लगभग इन सभी स्त्री पात्रों का उल्लेख वर्णित है। हालांकि अलग-अलग ग्रंथों में अलग-अलग भाव भूमि पर उनके चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन हुआ है किंतु अंतिम अभिधेय सभी का आदर्श को स्थापित करना ही रहा है। भूमंडलीकरण के इस समय में जब हम सभी के जीवन में त्याग, सहिष्णुता जैसे गुण विलुप्त होते जा रहे हैं तो ऐसे समय में राम कथा परंपरा के सभी स्त्री पात्र हमें हमारे जीवन के अप्रतिम गुणों से परिचित कराते हुए से प्रतीत होते हैं। स्त्री चेतना को जागृत करने में राम काव्य परंपरा में वर्णित स्त्री पात्रों की विशेष भूमिका रही है। इन्होंने वर्तमान में स्त्री विमर्श को एक नई दिशा व दशा प्रदान की है। रामकाव्य परंपरा के स्त्री पात्र आज के समय में सर्वाधिक प्रासंगिक हैं, क्योंकि एक ये ही हैं जो आधुनिकता की चकाचौंध में एक स्त्री की भव्य गरिमा को सुरक्षित रख सकते हैं।

संदर्भ

1. साकेत, मैथिलीशरण गुप्त; पृष्ठ_94
2. https://hindivivek.org
3. रामचरित मानस (अयोध्याकांड) तुलसीदास; पृष्ठ _ 6_7
4. रामचरित मानस (सुंदरकांड) पृष्ठ_ 9
5. वैदेही वनवास (पंचम सर्ग) संपादक_ भटनागर, हाडा, गहलोत, पृष्ठ _ 22
6. साकेत (सर्ग 9) मैथिलीशरण गुप्त; पृष्ठ_ 269
7. साकेत_संत(ग्यारहवां सर्ग) पृष्ठ_ 131
8. https:// hindi vivek.org
9. https://hindi vivek.org
10. साकेत : एक नव्य परिबोध, पृष्ठ_ 70
11. साकेत(सर्ग 8) मैथिलीशरण गुप्त; पृष्ठ_ 249
12. रामचरितमानस (लंकाकांड) तुलसीदास; पृष्ठ_ 763
13. रामचरितमानस(अरण्य काण्ड) तुलसीदास; पृष्ठ _ 650
14. वही, पृष्ठ_ 12